हथियार को औजार में बदलने की कवायद

लुप्तप्राय: आकलन स्रोत पुस्तिकाएं

रवि कांत

किसी हथियार को औजार में बदलना आसान नहीं होता। फिर अगर हथियार भी ऐसा हो जो साल दर साल हजारों-लाखों मासूमों के माथे पर नाकामी का टीका लगाकर ढोल नगाड़ों के साथ उन्हें शिक्षा से ही बाहर कर देता हो, तो आप क्या कहेंगे। हैरानी की बात तो यह है कि उनमें से ज्यादातर को इस बात का अहसास मरते दम तक नहीं होता कि दरसअल, उन्हें स्कूल से बाहर कर देने के लिए जिम्मेदार कौन है। वे खुद या कोई और? वे यह मानने के लिए मजबूर होते हैं कि वे खुद ही नाकारा हैं और तथाकथित न्यायपूर्ण परीक्षा को पास नहीं कर पाए। वे यह नहीं समझ पाते कि शैक्षिक उपलब्धि को जानने के नाम पर परीक्षा का असली मकसद तो छंटनी करना है और वह भी इस सफाई से कि आम जनता में सामाजिक असंतोष की आग भी भड़कने न पाए।

आजाद भारत के शैक्षिक इतिहास में परीक्षा के प्रेत से छुटकारा पाने की कोशिशें नीतिगत दस्तावेजों में तो कई दशकों से की जाती रही हैं। 2005 में न सिर्फ सभी विषयों के शिक्षाशास्त्र पर गहन व व्यापक विचार विमर्श करके राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 बनी बल्कि उसमें जिन विचारों की पैरवी की गई उनके आधार पर सभी विषयों की पाठ्यपुस्तकें भी 2008 तक बनाई गईं। इसी कड़ी में आकलन के नए नजरिए को पाठ्यचर्या व पाठ्यपुस्तकों के साथ व्यवस्थित तरीके से पेश करने के लिए सन् 2008 में चार प्रमुख विषय क्षेत्रों से जुड़ी पांच आकलन स्रोत पुस्तिकाएं बनाई गईं। परीक्षा के हथियार को आकलन के औजार में बदलने की कवायद को मजबूती 2009 में शिक्षा के अधिकार कानून से भी मिली, जिसमें सतत व समग्र आकलन को कानूनी जामा पहनाया गया। इन पुस्तिकाओं में परीक्षा के पैने पंजों को कुतर कर उसे सीखने व सिखाने में मदद करने वाले औजार के रूप में तब्दील करने की व्यवस्थित कवायद इस तरह से की गई कि वे कक्षा में अध्यापक की मदद कर सकें। इनमें आकलन को विस्तार व गहराई से पेश किया गया है और जहां जरूरी था वहां पारंपरिक परीक्षा के उदाहरणों का इस्तेमाल उस पद्धति की आलोचना करने के लिए किया गया है।



आकलन के नाम पर फिर से कहीं परीक्षा की तलवार न गढ़ दी जाए इसलिए सभी स्रोत पुस्तिकाओं में आकलन को लेकर बुनियादी सवालों पर विचार करके एक व्यवस्थित खाका गढ़ा गया है। शायद यह इस बात की याद दिलाने के लिए है कि विषय, उससे जुड़े ज्ञान को हासिल करने व उस ज्ञान की जांच करने के तरीके भले ही अलग-अलग हों लेकिन उनके आकलन को लेकर बुनियादी नजरिया सभी में एक-सा है। इस नजरिए की धुरी इस बात पर टिकी है कि आकलन का अहम् मकसद प्रशासनिक मकसदों से आंकड़े इकट्ठे करना न होकर, देश के हर बच्चे की बेहतर सीखने में मदद करना है; न कि लिंग, धर्म, जाति, रंग, आर्थिक स्तर के बहाने स्कूल व शिक्षा की चौहद्दी से बाहर फेंक देना। हम सभी जानते हैं कि करीब सौ साल की जद्दोजहद के बाद सभी बच्चों को सीखने का कानूनी हक भी कागजों में मिले जुम्मा-जुम्मा पांच साल ही हुए हैं। हर बच्चे को हकीकत में व पूरी गुणवत्ता के साथ इसे हासिल करने में अभी भी दशकों तक इंतजार करना पड़ेगा। अभी हम स्कूलों को ऐसी जगहें बनाने की नाकाम-सी कोशिश में लगे हैं जहां देश के 'हरेक बच्चे को चार प्रमुख विषय क्षेत्रों की विषयवस्तु को बेहतरीन तरीकों से सिखाया जा सके'। इसे हरेक स्कूल को खोलने व चलाने का सबसे अहम् मकसद माना जा सकता है।

इसे मकसद के रूप में रखते ही हमारे सामने तीन प्रमुख सवाल खड़े हो जाते हैं जिनका कोई न कोई जवाब दिए बगैर कोई भी स्कूल काम कर ही नहीं सकता।

1. हम प्राथमिक शिक्षा के आखिर में किस तरह के बच्चे बनाना चाहते हैं? बच्चों के बारे में हमारी धारणाएं क्या हैं?
2. चारों प्रमुख विषय क्षेत्रों में किस किस्म का ज्ञान शामिल होता है और क्यों? उनमें आपस में क्या फर्क होता है व उसका आधार क्या है? वह बनता कैसे है? उसके सही गलत होने की जांच कैसे की जा सकती है?
3. सीखने से जुड़ी किन बातों को हम ठीक मानते हैं और किसको गलत और क्यों?

और इन तीनों के आधार पर एक चौथा सवाल भी उठता है कि फिर कक्षा व विद्यालय का स्वरूप कैसा होगा?

आकलन स्रोत पुस्तिकाएं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 में बच्चे, सीखने व ज्ञान से जुड़ी बुनियादी मान्यताओं के मुताबिक बच्चे को कोरी स्लेट या खाली घड़ा मानने के बजाय उसे सीखने की प्रक्रियाओं में खुद की सक्रिय भागीदारी से ज्ञान निर्माण करने वाला जीवंत प्राणी मानती हैं। इसी तरह ज्ञान की चार प्रमुख किस्मों में फर्क के साथ उनके निर्माण करने के तरीकों में भी फर्क करती हैं और इसीलिए हर विषय क्षेत्र में किए जाने वाले आकलन के लिए अलग से पूरी-पूरी किताबें रची गई हैं। यहां तक कि एक क्षेत्र भाषा में तो हिंदी व अंग्रेजी के लिए अलग-अलग किताबें रचकर यह संदेश भी संप्रेषित किया गया है कि हर भारतीय भाषा की प्रकृति के अनुरूप आकलन के लिए अलग-अलग किताबें रचे जाने की जरूरत है। इसी के साथ कक्षा व विद्यालय के स्वरूप के बारे में यह बताती हैं कि उसमें आकलन की पद्धति सीखने व सिखाने के अभिन्न अंग की तरह होने के साथ हरेक बच्चे की जरूरत व उसके सीखने की गति और तरीकों के मुताबिक अलग व लचीली होनी चाहिए।

बच्चे, सीखने व ज्ञान से जुड़ी बुनियादी धारणाओं और उन पर आधारित कक्षा व विद्यालय के स्वरूप को सामने रखने के बाद आकलन स्रोत पुस्तिकाएं पांच बुनियादी सवाल खड़े करती हैं और उनके साथ मेल खाने वाले जवाब भी मुहैया करवाती हैं। वे पांच सवाल कुछ इस तरह से हैं:

1. आकलन क्यों करना चाहिए?
2. आकलन किस बात का या किस बारे में करना चाहिए?
3. आकलन कब करना चाहिए?
4. आकलन कैसे करना चाहिए?
5. आकलन से मिली सूचनाओं का इस्तेमाल कैसे करना चाहिए?

पहले सवाल का जवाब इस बात के इर्दगिर्द केन्द्रित रहता है कि इसका प्रमुख मकसद सीखते वक्त विद्यार्थी की जरूरतों को पहचान कर उसकी मदद करना है और सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को बेहतर बनाना है। दूसरे सवाल का जवाब सभी विषय क्षेत्रों में बच्चे द्वारा सीखी गई चीजों व सीखने में उसकी रुचि तथा तयशुदा कालावधि में उसके सीखने व व्यवहार में बदलाव पर केन्द्रित है। आकलन करने के बारे में स्रोत पुस्तिका सुझाती है कि यह रोज-ब-रोज व तयशुदा समयान्तराल के बाद किया जाना चाहिए।

‘आकलन कैसे किया जाए?’ इस पर स्रोत पुस्तिका बहुत व्यवस्थित तरीके से विस्तार के साथ बताती है। पुस्तिका सुझाती है कि पहले कदम में एक नहीं बल्कि अलग-अलग स्रोतों और तरीकों से सीखने के बारे में सबूत व सूचनाएं जुटानी चाहिए। सूचना के स्रोत अभिभावक, दूसरे अध्यापक, समुदाय के व्यक्ति, सहपाठी आदि हो सकते हैं। इसी तरह आकलन के चार मूलभूत तरीके भी सुझाए गए हैंः 1. व्यक्तिगत 2. सामूहिक 3. स्व-आकलन 4. सहपाठी द्वारा आकलन।

आप देख सकते हैं कि इनमें से पहले दो तरीके अध्यापक केन्द्रित हैं तो आखिरी दो बच्चों पर केन्द्रित हैं। स्व-आकलन व सहपाठी द्वारा आकलन को कामयाब बनाने के लिए जरूरी है कि आपको इस बात पर भरोसा हो और वह आपके तौर तरीके से जाहिर भी हो कि बच्चे अपना व अपने सहपाठी का ईमानदारी से आकलन कर सकते हैं। अगर स्व-आकलन दूसरों के साथ किसी होड़ पर नहीं टिका है और उसके नतीजों में किसी तरह की सजा मिलने या अपमान का सामना करने का खतरा मौजूद नहीं हो तो यह सीखने को बेहतर बनाने का बेहतरीन औजार की तरह काम आ सकता है।

दूसरे कदम में सूचनाओं को दर्ज करना लिया गया है। ये पुस्तिकाएं सुझाती हैं कि अवलोकनों को तुरंत दर्ज करना चाहिए। सभी क्षेत्रों में तथा खास तौर पर कला के काम के नमूने इकट्ठे करने चाहिए तथा गुणात्मक टीपें दर्ज की जानी चाहिएं। ये पुस्तिकाएं आकलन के कई अहम् औजारों व तकनीकों, जैसे, अवलोकन, दिया गया काम, परियोजनाएं, पोर्टफोलियो, चेकलिस्ट, रेटिंग स्केल, वर्णन व संचयी रिकॉर्ड आदि के बारे विस्तार से बताती हैं। हर विषय की आकलन पुस्तिका में इनमें से कइयों को उस विषय के संदर्भ में काम लेने के तरीकों के उदाहरण भी दिए गए हैं। ये पुस्तिकाएं सिर्फ सूचना को इकट्ठी करवाने पर ही नहीं रुकती बल्कि तीसरे कदम में उनकी मदद से बच्चों के सीखने में प्रगति के बारे में नतीजे निकालने व उनकी मदद के क्षेत्रों को पहचानने पर भी जोर देती हैं। सीखने में हुई प्रगति के आकलन के लिए हर विषय क्षेत्र में विस्तार से तथा उस विषय की प्रकृति के साथ संगत संकेतक भी सुझाती हैं और आखिरी कदम के तौर पर इकट्ठा किए गए सबूतों व नतीजों को फाइलों में दफ्ना देने के बजाय सीखने को बेहतर बनाने में इस्तेमाल करने के तरीके भी ये पुस्तिकाएं बतलाती हैं। उसे बच्चों व अभिभावकों तक संप्रेषित करने में बरती जाने वाली सावधानियां बताती हैं। इसके साथ ही खुद अध्यापक के लिए आत्मचिंतन के मुद्दों को भी रेखांकित करती हैं।

इन स्रोत पुस्तिकाओं की सबसे बड़ी खूबी हरेक विषय क्षेत्र से जुड़े ज्ञान की प्रकृति के मुताबिक आकलन का स्वरूप गढ़ना है और आकलन को कटे-फटे ज्ञान के टुकड़ों के बजाय लगातार व समग्र रूप में किए जाने वाले काम की तरह देखना है। इस बात को थोड़ा और गहराई से समझने के लिए अगले हिस्से में हरेक प्रमुख विषय क्षेत्र से जुड़ी किसी एक आकलन की गतिविधि को लेकर बात को समझने की कोशिश की गई है।

भाषा

भाषा को लें तो उसमें आकलन के बिंदुओं में भाषा के चारों पहलुओं के साथ स्वतंत्र व सृजनात्मक अभिव्यक्ति को भी रखा गया है। सोचने व समझने को केन्द्र में रखते हुए सुनकर समझने तथा सोचकर बोलने को एक साथ लिया गया है। इसी तरह समझने व समझ को व्यक्त करने पर जोर दिया गया है, जिसका एक सिरा लिखकर व्यक्त करने से भी जुड़ता है। आकलन के बिंदुओं का यह ढांचा पारंपरिक ढांचे से अलग है जिसमें सोचने व समझने एवं अभिव्यक्त करने को पढ़ने-लिखने से काटकर एक वक्त में एक ही कौशल जैसे लिखना या पढ़ना आदि को मशीनी ढंग से सीखने व अभ्यास करने व अंत में उसी का आकलन करने पर जोर दिया जाता था।

ऐसा भी नहीं है कि आकलन की सूची में अच्छी समझ व्यक्त करने वाले वाक्य लिख के बाकी किताबों व अभ्यास को रटंत आधारित पद्धति के अनुसार ही रहने दिया गया हो। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या से लेकर पाठ्यपुस्तकें आकलन में बदलाव से पहले ही बदल दी गई थीं। उन किताबों में विषयों में विषयवस्तु को प्रस्तुत करने तथा उन पर काम करने के तरीके बदले गए थे। इसी क्रम में पाठ्यपुस्तकों में आकलन को नए तरीके से करने का नजरिया इस्तेमाल किया गया। उनके बाद उन किताबों में विषयों पर काम करने के तरीके से संगत आकलन के तरीके को विस्तार से समझने के लिए ये पुस्तिकाएं गढ़ी गई। पुरानी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में अभ्यास के ज्यादातर सवाल सूचनात्मक हुआ करते थे जिनके जवाबों की सूचनाएं पाठ के भीतर से निकालनी पड़ती थीं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के बाद बनी पाठ्यपुस्तकों में दिए गए अभ्यासों में एक-दो सवाल ही उस पाठ की जानकारी पर आधारित रखे गए हैं लेकिन बाकी के ज्यादातर सवाल पाठ में आई चीजों को आधार बनाकर इस तरह रचे गए हैं कि वे बच्चों की कल्पना को फैलाएं, उनके खुद के अनुभवों को शामिल करें, दूसरे विषयों के साथ जोड़कर समझने तथा उनकी सोच व समझ को अपनी भाषा में व्यक्त करने का मौका दें, उनकी भाषाई क्षमताओं को बढ़ाएं, भाषा व कला के अनुभवों को जोड़ें, आदि।

हम पुस्तिका में आकलन को समझने के लिए नमूने के तौर पर चुनी गई चांद का कुर्ता नामक कविता को लेकर देखते हैं। इसमें पहली खास बात तो यह है कि आकलन की शुरुआत में संदर्भ बनाने के लिए कविता दी गई है। फिर दिए गए सभी सवाल उस कविता से जुड़े हुए हैं। संदर्भ से कटे सवालों के जवाब देते वक्त रट्टा मारकर उन सवालों के जवाब लिखना बच्चों की व उन पर अंक या श्रेणी देना अध्यापक की मजबूरी हो जाती है जो असल में परीक्षा तंत्र व परीक्षा पत्र की देन होती है। संदर्भ को देना ही इस बात का सूचक है कि बच्चे से कविता को पढ़ने, समझने और फिर उसके बाद दिए सवालों के जवाब देने की क्षमता की उम्मीद रखी जा रही है। आप याद करें तो क्या यही भाषा पढ़ने-लिखने के व्यापक उद्देश्य नहीं हैं? आपको झटका इस बात से भी लग सकता है कि यह कविता तो पाठ्यपुस्तक में है ही नहीं। अब जो कविता पाठ्यपुस्तक में ही नहीं है उससे जुड़े सवालों को भला रटवाया कैसे जा सकता है। रटना कभी भी कागजों में भाषा सिखाने का उद्देश्य नहीं रहा लेकिन व्यवहार में हमेशा तमाम स्कूलों का सबसे प्रमुख तरीका बना रहा है। उसकी एक बड़ी वजह परीक्षा में संदर्भ रहित सवालों को पूछना रहा है। दूसरी खास बात यह है कि अलग-अलग सवाल रटने की नहीं अलग-अलग भाषाई व अन्य क्षमताओं की जांच करते हैं। जैसे, 'चांद अपनी मां से किस बात के लिए जिद कर रहा है?', यह सवाल कविता में आई जानकारी पर आधारित है। इससे यह जानने की कोशिश की जा रही है कि बच्चे ने कविता पढ़कर उसकी प्रमुख घटनाक्रम को समझ कर याद रखा है या नहीं। या 'मां चांद का कुर्ता सिलने के लिए क्यों तैयार नहीं है?', इस बात का जवाब भी कविता के भीतर से निकाला जा सकता है। यानी, कुछ सवाल ऐसे हैं जो कविता पढ़ने से बनी समझ का आकलन करते हैं।

चांद का कुर्ता

हठ कर बैठा चांद एक दिन, माता से यह बोला
सिलवा दो मां, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।

सन-सन चलती हवा रात भर, जाड़े में मरता हूं
ठिठुर-ठिठुर कर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूं।

आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का
न हो अगर तो ला दो कुर्ता ही कोई भाड़े का।

बच्चे की सुन बात कहा माता ने, अरे सलोने!
कुशल करे भगवान, लगे मत तुझको जादू टोने।

जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूं
एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूं।

कभी एक अंगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा
बड़ा किसी दिन हो जाता है और किसी दिन छोटा

घटता-बढ़ता रोज किसी दिन ऐसा भी करता है
नहीं किसी की भी आंखों को दिखलाई पड़ता है।

अब तू ही बता, नाप तेरी किस रोज लिवाएं
सी दें एक झिंगोला जो हर रोज बदल में आए?

एक सवाल में बच्चे से ऐसी ड्रेस का चित्र बनाने के लिए कहा गया है जिसे घटता-बढ़ता चांद रोज-रोज पहन सके। यह सवाल कल्पनाशीलता की मांग तो करता ही है, इसके साथ ही उस कल्पनाशीलता को तस्वीर के जरिए दर्शाने की काबिलियत की मांग भी करता है। ऐसी कोई ड्रेस कविता में सुझाई नहीं गई है। सो बच्चे को ऐसी ड्रेस की खुद कल्पना करनी है। लेकिन उस कल्पना की बुनियाद कविता में आए कथ्य से चुननी है। यहां पर भाषा व कला का संबंध बनाने की कोशिश भी साफ नजर आती है और कला के जरिए भाषाई अनुभव को समृद्ध करने की भी।

फिर एक सवाल में भाड़े के कुर्ते का मतलब पूछा गया है। यह उस तरह से नहीं पूछा गया है जिसमें 'भाड़े' शब्द लिखकर बच्चों से शब्दार्थ के तौर पर रटा हुआ 'किराया' लिखने को कहा जाता है। यहां पर पहले कविता तो दी ही गई है सवाल में भी पूरी पंक्ति का संदर्भ दिया गया है 'न हो अगर तो ला दो कुर्ता कोई भाड़े का', यानी बच्चा चाहे तो इस सदर्भ से भी अर्थ का अनुमान लगा सकता है और मुश्किल हो तो पूरी कविता के संबंधित हिस्से को भी पढ़ सकता है। हम सभी नए शब्दों के अर्थ बूझने के लिए लिए अक्सर संदर्भ का ही सहारा लेते हैं, उसी के जरिए बच्चे की अर्थ निकालने की काबिलियत का आकलन किया जा रहा है। ऐसे ही एक सवाल में भाड़े की शर्तें बच्चों से तय करने के लिए कहा जा रहा है। अब ये जवाब भी कविता में कहीं नहीं है, इसे बच्चे को अपनी चीजों को दूसरों को देते वक्त लौटाने की शर्तों के अनुभवों की मदद से हल करना है। यानी अपने अनुभवों की मदद से समस्या का जवाब तलाश कर बताना है।

एक सवाल में कविता में आई चांद व उसकी मां के बीच की बातचीत को संवाद के तौर पर लिखने के लिए कहा गया है और मदद के लिए आरंभ के एक-दो संवाद भी दिए गए हैं। इस सवाल में भाषा की एक विधा-पद्य में कही गई बात को दूसरी विधा-संवाद में रूपांतरित करने की काबिलियत का आकलन किया जा रहा है। आखिर किसी बात को समझने का यह मतलब भी होता है कि नहीं कि आप एक ही बात को एक से ज्यादा विधाओं का इस्तेमाल करके अपने शब्दों में कह या लिख पाएं। बहुत सारे सवालों को समझने के लिए उनके साथ एक उदाहरण भी दिया गया है ताकि बच्चे न सिर्फ सवाल को पढ़कर बल्कि उसके साथ दिए उदाहरण से जोड़कर भी समझ पाएं कि उनसे क्या पूछा जा रहा है। इसके साथ ही इस तरह सवालों के जवाबों के आकलन को करने के संकेतकों व उनके तरीकों के बारे में भी स्रोत पुस्तिकाओं में समझाया गया है।

इसी तरह एक सवाल में कविता में चांद की जिद के बहाने बच्चों से यह पूछा गया है कि बताओ सूरज अपनी मां से किस चीज की जिद करेगा? इस सवाल जवाब की तलाश में बच्चों से कुछ इस तरह से तर्क करने की उम्मीद की जा रही है कि वे चांद के घटने-बढ़ने के गुण की ही तरह सूरज का कोई गुण तलाशें और उस गुण से जुड़ी कोई चीज सोचकर बताएं। इस तरह से सवालों की एक खूबी यह भी है इनके जवाब में सभी बच्चों द्वारा किसी एक ही तरह का गुण देखकर एक ही तरह की चीज का अनुमान लगाना जरूरी नहीं है। इसमें अध्यापक को भी सोचना पड़ेगा कि क्या बच्चे ने सूरज का सही गुण पहचाना है या अनुमान लगाया है और किसकी चुनी गई चीज उस गुण के साथ संगत बैठती है। आकलन के ज्यादातर सवालों की एक खासियत यह भी है कि अध्यापक खुद भी आंखें मूंदकर बच्चों के जवाबों का आकलन नहीं कर सकते क्योंकि बहुत सारे सवालों का कोई एक सटीक या सही जवाब है ही नहीं। सो जरूरी तौर पर उसे भी हर बार अपने दिमाग का इस्तेमाल बच्चों के जवाबों को समझने में करना पड़ेगा।

'नाप की इकाइयां' वाले सवाल में बच्चों की अंगुल भर चौड़ाई से नापी जा सकने वाली चीजों की दी गई सूची में से छंटवाया गया है। इस सवाल में कविता की एक पंक्ति के बहाने गणित की एक बुनियादी अवधारणा मापन से जुड़ा काम देकर उसकी उपयुक्त इकाई के चयन से जुड़ी समझ की जांच करने की कोशिश की गई है। इसी सवाल में वर्गीकरण यानी छंटनी करने की काबिलियत का आकलन भी किया जा रहा है।

ऐसे ही विलोम शब्दों से जुड़ी समझ का आकलन करने के लिए भी कविता के वाक्य का संदर्भ देने के साथ हर शब्द के लिए एक वाक्य का संदर्भ दिया है और दूसरे वाक्य में दिए गए संदर्भ में उपयुक्त विलोम शब्द को रखने का काम दिया गया है। यानी, व्याकरण से जुड़े कामों को भी रटंत सवालों के दायरे से बाहर निकालकर संदर्भ की मदद से

सही शब्द की समझ जानने की कोशिश की जा रही है। इसी तरह आकलन के सवालों में शब्दों के अर्थ को समझने के पारंपरिक तरीके से अर्थ देकर याद करवाने के बजाय कविता में से संदर्भ सहित उस शब्द को लेकर उसका अर्थ समझाया गया है। और यहीं तक काम करके अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं मानकर इसके बाद उस अर्थ को समझने के लिए अभिनय करवा कर देखने का काम भी आकलन में शामिल किया गया है। ठिठुरना शब्द इस पूरी प्रकिया में बच्चों सामने जीवंत हो उठता है।

ऊपर दिए नाप, ड्रेस वाले सवालों को देखें तो यह साफ होता है कि इनके जरिए भाषा, कला व गणित के बीच की मजबूत दीवारों को तोड़कर उनके बीच के संबंधों का आकलन करते वक्त बखूबी इस्तेमाल किया गया है। आप यह भी देख सकते हैं कि आकलन के सवाल न तो नीरस हैं और न ही बच्चों को डराने वाले हैं और इस तरह से समझ को जांचने का काम करने वाला औजार ही हो सकता है, हथियार नहीं।

गणित

गणित में अगर गणनविधियों यानी किसी गणना को करने का तरीका जानना ही आकलन करना होता तो इस स्रोत पुस्तिका की जरूरत ही नहीं थी। वह तो हम सभी को आता ही है और हम उसे सालों से करते ही आ रहे हैं। हमारे परीक्षा के पर्चों में कई सारे अंकों में व कुछ शब्दों में लिखे सवाल होते थे जिन्हें हमें परीक्षा में हल करना होता था। चूंकि परीक्षाओं को आकलन में बदलने का मामला सिर्फ सवालों को बदलने का ही नहीं है। उन सवालों को गढ़ने के पीछे की मान्यताओं को समझने का भी है। इसलिए बाकी विषयों की तरह ही गणित की स्रोत पुस्तिका में गणित के नजरिए को समझाने के लिए यह बात की गई है कि गणितीय ज्ञान बनता कैसे है। इसके साथ ही गणित अध्यापन से जुड़े बहुत से आमफहम सवालों के जवाब भी दिए गए हैं।

जिस देश के ज्यादातर विद्यालयों में गिनती, पहाड़े रटाए जाते हों, उसमें स्रोत पुस्तिका पहली ही बात यह सुझाती है कि बच्चे असली जिंदगी की समस्याओं को सुलझाने के लिए की जाने वाली ठोस गतिविधियों (जिसमें चीजों का भी इस्तेमाल हो और जो बहुत ही व्यवस्थित तरीके से सोच-समझ कर किसी खास गणितीय प्रकरण की समझ को विकसित करने के लिए गढ़ी गई हो) के जरिए अपनी गणित की समझ को गढ़ते हैं। वह गणित के ज्ञान की इस खूबी को भी सामने रखती है कि उसके हिस्से तार्किक तरीके से सीढ़ीनुमा क्रम में एक-दूसरे के साथ जुड़े रहते हैं। जैसे, आप संख्या को सीखे बगैर जोड़ व घटाव नहीं सीख सकते या जोड़-घटाव को सीखे बगैर गुणा-भाग नहीं सीख सकते। इसी तरह वह यह भी बताती है कि बच्चों को अवधारणाएं भी सीखनी होती हैं और उनसे जुड़ी गणनविधियां भी और ये दोनों एक-दूसरे की दुश्मन नहीं बल्कि आपस में एक-दूसरे के विकास में मददगार ही होती है।

भाषा की ही तरह राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के बाद गणित की किताबें भी नए नजरिए के साथ लिखी गई थीं। उसी नजरिए के तहत बनी गणित की समझ का आकलन करने के लिए गणित की पुस्तिका अलग-अलग अवधारणाओं के शीर्षकों में व्यवस्थित की गई है। जैसे, संख्याएं, संक्रियाएं, आकृतियां व आकार, मापन आदि। अगर हम उदाहरण के लिए संक्रियाओं को लें तो वह आकलन के मकसद में संक्रियाओं के लिए उपयुक्त हालातों की कल्पना कर पाना, गणना को सुगमता के साथ कर पाना और समस्याओं को हल करने में कार्यनीतियों का इस्तेमाल कर पाने को शामिल करती है। इसके साथ ही जोड़ व घटाव की संक्रिया का विश्लेषण करके उससे जुड़ी समस्याओं को चार किस्मों में बांटती है- जोड़ना, निकालना, तुलना करना तथा समूहों को मिलाना।

गणित की सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि इसमें प्रतीकों का इस्तेमाल होता है। हर प्रतीक का कोई न कोई मतलब होता है और हरेक प्रतीक का किसी दूसरे प्रतीक से कोई न कोई संबंध होता है। फिर ये संबंध ऐसे होते हैं कुछ संबंधों को बनाने के लिए उससे पहले कुछ प्रतीकों के अर्थ व उनके आपसी संबंधों को जानना समझना जरूरी होता है और ऐसे संबंधों की कई परतें व उनका आपस में संबंध होता है। इसीलिए यह पुस्तिका गणित की अवधारणाओं के अलग-अलग पहलुओं के लिए प्राथमिक स्तर तक के आकलन के लिए 135 गतिविधियां तो खुद ही सुझा देती है, व नई गढ़ने के लिए भी संभावनाएं खुली रखती है।

इन गतिविधियों की खासियत यह भी है कि ये अवधारणात्मक क्षेत्र पर अपना ध्यान केन्द्रित करती हैं और उनको लगातार असली जिंदगी की समस्याओं के संदर्भ में रखकर देखने के साथ-साथ उसकी अवधारणात्मक पेचीदगियों को भी नजरअंदाज नहीं करती। जैसे, संक्रियाओं को हालातों से जोड़ने के अवधारणात्मक क्षेत्र के लिए एक गतिविधि में सामग्री कागज व कलम या मौखिक काम सुझाया गया है। फिर कठिनाई के बढ़ते क्रम में तीन समस्याएं दी गई हैं जो तीन तरह की हैं। पहली समस्या है कि फैज ने ईद पर 5 लड्डू खाए। अभी भी उसके पेट में 4 लड्डू के लायक जगह बची है। बताओ उसने कितने लड्डू खाए? यानी इस समस्या में आपको चीजों के दो समूह मिलाकर नतीजे में मिलने वाली संख्या का पता लगाना है। किसको यह पसंद नहीं आता कि कुछ लड्डू खाने के बाद कुछ और भी मिल जाएं।

दूसरी समस्या है कि सुमा के पास कहानियों की 8 किताबें हैं। उसे अपनी जन्मगांठ पर कुछ किताबें मिलीं तो उसके पास कुल 12 किताबें हो गईं। बताओ उसे कितनी किताबें अपनी जन्मगांठ पर मिलीं? यानी, इस समस्या में पहली संख्या में आया बदलाव अनजाना है। यह पहले सवाल से मुश्किल है क्योंकि आपको पहली संख्या पता है, नतीजा पता है लेकिन पहली संख्या में कितना और मिलाएं कि नतीजे वाली संख्या मिल जाए; यह नहीं पता है। जिनको कहानी के जादू ने अपनी गिरफ्त में ले रखा है उनके लिए इस सवाल में छुपी संभावनाएं उत्साह जगाने वाली हो सकती हैं।

इसी तरह तीसरा सवाल कुछ इस तरह का है कि सुषमा के पास कुछ पतंगें थीं, उसे छत पर 2 पतंगें और मिल गईं, अब उसके पास 11 पतंगें हैं, तो बताओ उसके पास पहले कितनी पतंगें थीं? यानी, इस सवाल में पहली संख्या का पता लगाना है। पतंगबाजी के दीवाने बच्चों द्वारा पतंग से जुड़े सवाल में रुचि होने की संभावनाएं भरपूर है। आप देख सकते हैं कि तीनों सवालों में कठिनाई को स्तर अलग-अलग है। सवालों में सार्थक व बच्चों की रुचि के संदर्भ गढ़े गए हैं। आप तीनों सवाल देकर या इसी तरह के कुछ दूसरे सवाल गढ़कर व उन्हें बच्चों से करवाकर इस बात का आकलन कर सकते हैं कि आपके बच्चे समस्याओं को हल करने के मामले में किस स्तर पर हैं। क्या वे तीनों तरह की समस्याएं हल कर पाते हैं या किसी एकाध समस्या को हल करके बाकी समस्याओं में अटक जाते हैं। इस आकलन के आधार पर आप उनके सीखने की योजना बना सकते हैं।

इसी तरह गणना में कुशलता हासिल करने के साथ भी चर्चा के लिए बहुत से सवाल दिए गए हैं जिनकी मदद से गणना करने के तर्क की समझ का आकलन भी उसके साथ किया जा सके। गणना को करने में काम ली जाने वाली कार्यनीतियों के अवलोकन व उन पर उठाने लायक सवाल भी सुझाए गए हैं ताकि उस आधार पर बच्चों की समझ की गहराई व उसकी व्यापकता का आकलन किया जा सके व उसे बेहतर करने की योजनाएं बनाई जा सकें।

कला

कला आम तौर पर हमारे यहां नजरअंदाज करने लायक विषय रहा है, जिसे न तो दूसरे विषयों के साथ ठीक से काम लिया जाता है और न ही विषय के तौर पर ठीक से सिखाया जाता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 प्राथमिक स्तर पर कला को विषय के साथ पढ़ाने के लिए न सिर्फ सुझाती है बल्कि पाठ्यपुस्तकों में ऐसे ढेरों काम भी शामिल करती है जो उन विषयों को न सिर्फ सीखने में मददगार होते हैं, बल्कि उसमें कई तरह के रंग, आवाजें भर देते हैं, जैसे भाषा की किताबों में कविता में आई आवाजें निकालना, कहानी में आए शब्दों से जुड़ी तस्वीरें बनाना, गद्य को संवाद में बदलकर उसका अभिनय करना, आदि। इसी तरह से पर्यावरण व गणित की पाठ्यपुस्तकों में भी ऐसे काम शामिल किए गए हैं जो उस विषय के प्रकरणों को सीखने के जरूरी हिस्से के तौर पर कला के काम को शामिल करते हैं। इसी तरह से पाठ्यचर्या उच्च प्राथमिक में कला को विषय के साथ के अलावा एक स्वतंत्र विषय के तौर पर सिखाने की भी सिफारिश करती है।

विषय के साथ सिखाने वाली बात को रिमझिम एक में दी गई 'छुक छुक गाड़ी' कविता के उदाहरण से समझा जा सकता है। इस कविता के साथ संगीत, लय-ताल और गतियों का बहुत सुंदर तरीके से इस्तेमाल किया जा सकता

है। उसके लिए सरल-सी धुन बनाई जा सकती है, उसमें आई आवाजों जैसे धक धक, भू भू, छुक छुक आदि को चीजों से जोड़कर समझा जा सकता है। रेलगाड़ी बनकर अभिनय के साथ व धुन के साथ कविता को गाया जा सकता है। कविता के हरेक शब्द को साफ-साफ बोलकर सुना जा सकता है। शब्दों के दोहरान को बच्चों द्वारा कुछ खास गतियों के साथ जोड़ा जा सकता है। इस कविता को लेकर बच्चों के साथ कक्षा के बाहर भी जाया जा सकता है। आखिर एक-दूसरे की कमीज/कमर पकड़े तरह-तरह की आवाजें निकालते, उछलते-कूदते कक्षा से बाहर जाकर आकलन करवाने में किसे मजा नहीं आएगा।

दूसरे विषयों की ही तरह कला में भी आकलन विषय को सिखाने के तरीके पर निर्भर करता है, इसीलिए विषय को सिखाने के तरीकों में व्यापक बदलाव की बात की गई है। स्रोत पुस्तिकाएं हमें चेताती हैं कि बाकी सभी विषयों की ही तरह कला में भी आकलन को होड़ पर आधारित नहीं होना चाहिए। कला का मकसद बच्चों में कलात्मक अभिरुचि व कौशलों का विकास करना है, तो आकलन को भी उस पर केन्द्रित होना चाहिए। पुस्तिकाएं आकलन के लिए दो प्रमुख पहलुओं पर ध्यान देने की सिफारिश करती हैं। पहला, प्रक्रिया आधारित और दूसरा संकेतक आधारित। यह कई कलात्मक प्रक्रियाओं की सूची भी सुझाती है जिनकी मदद से आकलन किया जा सकता है, जैसे, खोजबीन करना, लगन के साथ काम करना, गहराई से समझना, संप्रेषण, कौशलों का इस्तेमाल करना सृजनात्मकता, विश्लेषण, आलोचना आदि। इसी तरह संकेतक भी सुझाए गए हैं, जैसे काम के साथ जुड़ाव, गहराई से देखना-समझना, अभिव्यक्त करना, पुनर्चिंतन करना, प्रतिक्रिया देना, कीमत समझना आदि।

संकेतक आधारित आकलन को समझने के लिए एक उदाहरण लेते हैं, जैसे, आप गतिविधि में बच्चों को अपने आसपास के व्यक्तियों की भूमिका अदा करने के लिए कहते हैं। पहले स्तर पर आप यह देख सकते हैं कि वह भूमिका किस तरह से अदा कर रहा है व उससे जुड़ी दृश्यात्मक सामग्री किस तरह से पेश कर रहा है। दूसरे स्तर पर आप यह देख सकते हैं कि अपनी व दूसरों की सामग्री या भूमिका की विवेचना कर सकता है या नहीं, उसमें बारीकी से अवलोकन कर पाता है या नहीं। तीसरे स्तर पर आप यह देख सकते हैं कि वह अपनी विवेचना के आधार पर अपनी भूमिका में बदलाव करके उसे समृद्ध कर पाता है या नहीं। स्रोत पुस्तिका इस पूरे संकेतक को भी तीन हिस्सों में बांटती हैः वर्णनात्मक या व्याख्यात्मक, चिंतनपरक और दोबारा गढ़ना। इसी तरह से दूसरे संकेतकों को भी अलग अलग हिस्सों में बांटकर उन्हें उदाहरण सहित समझाया गया है।

पर्यावरण अध्ययन

हमारे यहां सभी विषयों को एक ही तरीके से, याद करके उससे जुड़े सवालों के जवाब लिखवा देने की परंपरा की जड़ें पाताल से भी गहरी हैं। जिसके नतीजे में पर्यावरण के अध्याय याद करवा के उसमें दी गई जानकारी को सही तरीके से याद रखने की काबिलियत की जांच की जाती रही है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 में दूसरे विषयों के साथ पर्यावरण अध्ययन की किताबें आमूलचूल तरीके से बदली गई थीं और उन्हें सिर्फ अवधारणाओं के वर्णन पेश करने के बजाय इस विषय से जुड़ी क्षमताओं को विकसित करने के जरिए अवधारणाओं की समझ बनाने के लिए केन्द्रित किया गया था।

इस विषय में आकलन के लिए स्रोत पुस्तिका अवलोकन व अंकन करना, व्याख्या करना, विश्लेषण करना, चर्चा करना, वर्गीकरण करना, प्रयोग करना, अभिव्यक्त करना, सवाल खड़े करना, सहयोग करना, समता व बराबरी के सरोकार नामक संकेतकों की पहचान करती है, जिनकी मदद से इस विषय में महारत हासिल करने की तरफ बढ़ा जा सकता है। इस विषय में सीखने व उसके साथ आकलन के तरीके को समझने के लिए एक उदाहरण लेते हैं। मान लो, एक अध्यापक आकलन में उपरोक्त संकेतकों में से कुछ के आधार पर बच्चों का आकलन करना चाहता है और इसके लिए अपने आसपास बनी एक घुड़साल को चुनता है। बच्चों को उपसमूहों में इस घुड़साल का अवलोकन करने, वहां काम करने वालों से बातचीत करने व उस जगह का अवलोकन करके नोट्स दर्ज करने व लौटकर उनके आधार पर बच्चों द्वारा अलग-अलग तरह से प्रस्तुतीकरण किए जाने की योजना बनाता है।

इस काम का आरंभ पुस्तकालय से घोड़ों के बारे में किताब लाकर उसकी मदद से बच्चों के साथ बात करके किया जा सकता है। इसके बाद वह बच्चों के समूह बनाकर वह अलग-अलग बांटकर हरेक सदस्य को एक काम दे सकता है (वहां काम करने वालों से बात करके उसे दर्ज करना, वहां के अवलोकन को दर्ज करना, आदि)। हरेक उपसमूह को चार काम करने के लिए दिए जा सकते हैं- लेखक, साक्षात्कारकर्ता, रपट लेखक, सहायक। इसके बाद हरेक उपसमूह को सवाल बनाने के लिए कहा जा सकता है। बच्चों द्वारा बनाए जा रहे सवालों और उसके बाद घुड़साल की यात्रा के वक्त अध्यापक बच्चों के सीखने के बारे में अपने अवलोकनों को दर्ज कर सकता है। वह उस दौरान बच्चों से बात करता रह सकता है। इस दौरान यह भी जरूरी है कि अध्यापक भी उस जगह का गौर से अवलोकन कर ले। वह बच्चों द्वारा की जा रही बातों को ध्यान से सुनकर उनमें से जरूरी बातों को याद रख सकता है या उनके नोट्स ले सकता है। उस दौरान दर्ज की गई टीपों को नीचे दिए क्षेत्रों में बच्चों का आकलन कर सकता है।

1. कामों में बच्चों की भागीदारी का अवलोकन करके; 2. यात्रा से पहले बच्चों द्वारा विकसित किए गए सवालों का विश्लेषण करके 3. छात्रों द्वारा बनाई तस्वीरें व उनके द्वारा किए गए अभिनय से 4. छात्रों के लिखित व मौखिक प्रस्तुतीकरण से।

उदाहरण के लिए, बच्चों द्वारा बनाई गई तस्वीरों व किए गए अभिनय पर अध्यापक कुछ इस तरह से आकलन कर सकता हैः उपसमूह 1 व 3 ने घुड़साल का दृश्य बनाया लेकिन उनमें से एक उपसमूह ही अपनी बात को ठीक से संप्रेषित कर पाया। सीमा ने घुड़साल की देखभाल करने वाले का रोल अच्छी तरह से किया तो मीनू पूरे दृश्य में घोड़े की तरह चलती-फिरती व हिनहिनाती रही। उपसमूह 2 व 4 ने घुड़साल की तस्वीर बनाई। उनकी तस्वीरों में घुड़साल में देखी गई कई छोटी-मोटी चीजें जैसे बाल्टी, मग, रस्सी, दीवार पर टंगे कपड़े आदि दर्शाए गए थे। उपसमूह 2 ने सभी घोड़े एक ही आकार व आकृति के बनाए जबकि उपसमूह 4 के घोड़ों के आकार व आकृतियां दोनों ही अलग-अलग थे।

आप देख सकते हैं कि यह आकलन काफी हद तक उपसमूह पर केन्द्रित है। लेकिन इससे हमें समूह के बच्चों की समूह में काम करने, बारीकी से अवलोकन करने, देखे गए दृश्य को दूसरे माध्यम में पुनर्जीवित कर पाने, आदि की काबिलियत का पता चलता है। ये सभी काबिलियतें एक शिक्षार्थी के तौर पर बच्चों को अपने आसपास के अनुभवों को ज्ञान में तब्दील करने में मदद करती है।

इसी तरह की कई दूसरी गतिविधियां व तरीके स्रोत पुस्तिका में सुझाए गए हैं जो बच्चों को सक्रिय कर्ता के तौर पर अपने आसपास को समझते हुए, विश्लेषण करते हुए अपने ज्ञान को गढ़ने में मददगार होते हैं और उनका आकलन भी उनके साथ मेल खाने वाले तरीकों से ही किए जाने पर बच्चों के सीखने में आ रही मुश्किलों को समझ कर उनकी मदद करने की योजना बनाई जा सकती है।

आखिर में, इस पूरे प्रयास को जमीनी स्तर पर इस्तेमाल करते हुए अमलीजामा पहनाने की कोशिशें न के बराबर हुई हैं। बनने के 8 साल बाद तक भी ये पुस्तकें हिन्दी और भारत के संविधान की छठी अनुसूची में शामिल भारतीय भाषाओं में उपलब्ध नहीं करवाई गई हैं। अगर सीखने में बदलावों के साथ-साथ आकलन में बदलावों को जमीनी स्तर पर उतराना है तो ये पुस्तिकाएं शिक्षकों की उनकी अपनी भाषा में उनके हाथ में आना उस दिशा में पहला कदम हो सकता है। इसके साथ ही इनके इस्तेमाल के लिए उपयुक्त हालात बनाए जाएं व अध्यापकों को तैयार किया जाए व लगातार उनकी मदद की जाए तो मुमकिन है कि हम परीक्षा के प्रेत से मुक्ति पाने की दिशा में कुछ कदम आगे बढ़ सकें। ◆

लेखक परिचयः तकरीबन 20 वर्षों से प्रारंभिक शिक्षा में शिक्षक शिक्षा, शिक्षण सामग्री एवं पाठ्यपुस्तक निर्माण, शिक्षाक्रम और अनुवाद के क्षेत्र में कार्य। हाल-फिलहाल विभिन्न संस्थाओं के साथ बतौर शैक्षिक सलाहकार कार्यरत हैं।